आरती श्री कुंज बिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।
गले में बैजयन्ती माला । बजावै मुरली मधुर बाला ।
श्रवन में कुण्डल झलकाला ।नन्द के आनन्द नन्दलाला ।
गगन सम अंग कांति काली । राधिका चमक रही आली ।
लतन में ठाढें बनमाली । भ्रमर सी अलक ।
कस्तूरी तिलक, चंद्र सी झलक ।ललित छवि श्यामा प्यारी की ।।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की.....

कनमय मोर मुकुट बिलसै । देवता दरसन को तरसैं ।
गगन सों सुमन रासि बरसै । बजे मुरचंग ।
मधुर मिरदंग, ग्वालिन संग । अतुल रति गोप कुमारी की ।।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की.....

जहां ते प्रकट भई गंगा ।कलुष कलि हारिणि श्रीगंगा ।
स्मरन ते होत मोह भंगा । बसी सिव सीस जटाके बीच ।
हरै अघ कीच, चरन छवि श्रीबनवारी की ।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की.....

चमकती उज्जवल तट रेनू । बज रही वृन्दावन बेनू ।
चहुं दिसि गोपि ग्वाल धेनू। हंसत मृदु मंद चांदनी चंद ।
कटत भव फन्द, टेर सुन दीन भिखारी की ।।

श्री गिरधर कृष्णमुरारी की.....

आरती कुंजबिहारीजी की । श्री गिरधर कृष्णमुरारी की ।।

विवरण

ब्रज की गलिओं में विहार करने वाले, एवं गोवर्द्धन पर्वत को एक अँगुली पर धारण करने वाले कृष्ण मुरारी की आरती है । इनके गले में बैजयन्ती के फूलों की माला शोभ रही है तथा ये मुरारी अपनी बाँसुरी अत्यन्त ही मधुर आवाज में बजा रहे हैं । इनके कानों में कुण्डल झलक रहें हैं, तथा अपने नन्द बाबा को परम आनन्द देनेवाले ये कृष्ण मुरारी हैं ।

इनके अंगों की कांति नीले आकाश के समान श्याम वर्ण की है, इनके बगल में इनकी सखी राधिका की छवि चमक रही है, इनके माथे पर इनके काले घने बाल बिखर गयें हैं, जो भँवरे के समान प्रतीत हो रहें हैं, कस्तूरी का चन्दन लगाए हुए हैं । इनकी झलक चन्द्रमा के समान प्रतीत हो रही है । ऐसे गिरधर कृष्ण मुरारी की हम आरती करते हैं ।

सोने से सुसज्जित इनके मोर मुकुट को देखने के लिए देवता भी तरस जाते हैं, आकाश में से फूलों की वर्षा हो रही है, तरह -तरह के मृदंग मधुर आवाज में बज रहे हैं, ग्वाल एवं ग्वालिन इनके संग में है तथा गोप कुमारी राधा भी इनके संग में है, जिसकी सौंदर्य एवं प्रतिमा की तुलना नहीं की जा सकती ऐसे श्रीकृष्णमुरारी की जय हो ।

जहाँ से गंगा प्रगट हुईं हैं,मन के सारे पाप धुलने वाली गंगा, जिनके स्मरन करते ही सारे मोह माया भंग हो जाते हैं, जो भगवान शंकर के सिर के जटा में बसी हुई है जो पापियों के पाप को पल में धो डालती हैं, इतना ही पुण्य इन श्री कृष्ण के चरणों की छवि पाने से मिलता है, ऐसे श्रीकृष्णमुरारी की जय हो ।

इनका लालट उज्जवल तट के समान चमक रहा है वृन्दावन में बेनू बज रही है, चारों ओर गोपी, ग्वाल एवं गायें घूम रही हैं चाँद की चाँदनी धीमी गति से ऐसी छिटक रही है मानो मीठी हँसी हँस रही हो । जीवन-मरण का जो क्रम है, उससे छुटकारा दिला दो हम गरीबों की इस विनती को सुन लो । हे व्रज की गलियों में घूमने वाले व्रजनन्दन !

आपकी आरती है ।

---

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.